



मैं भी नाम कमाता

- डॉ. दिविक रमेश

फौज में भर्ती होकर देश की सेवा करने तथा राष्ट्रपति से पुरस्कार पाने के बच्चों के सपनों को कवि ने शब्द-रूप दिया है। यह कविता सचमुच बच्चों के लिए प्रेरणादायक है।

रोज़-रोज़ सीमा की खबरें,
सुन-सुनकर मन नन्हा मेरा,
मुस-मुसकर रह जाता।

अगर न होता छोटा बच्चा,
तो लेकर बन्दूक हाथ में,
मैं भी नाम कमाता।

झटपट होकर बड़ा फौज़ में,
एक यही बस मन में आता,
मैं भर्ती हो जाता।

माँ कितनी खुश होती जब मैं
एक बड़ा सा पुरस्कार भी
राष्ट्रपति से पाता।

